द्वितीय अध्याय

समस्या का स्वरूप, व्याप्ति तथा अर्थ

द्वितीय अध्याय

समस्या का स्वरूप, व्याप्ति तथा अर्थ

विषय प्रवेश -

आधुनिक युग में मानव ने विज्ञान के द्वारा नयी खोज कर प्रगति के द्वार खोलते हूए जीवन की जटिलताओं को भी जन्म दिया है । परिणामत: आज मानव जीवन बहूत सी समस्याओं से घिरा हुआ है । आज मनुष्य की प्रवृत्ति भौतिक सुख की ओर अधिक झुकी हुई दिखाई देती है । इस प्रवृत्ति के कारण मनुष्य भौतिक सुख पाने हेतु हर समय कार्यरत रहने लगा है । नये-नये खोज द्वारा वह अपना जीवन अधिक से अधिक सुखी बनाना चाहता है । उसकी सुखी जीवन की कल्पनाओं का कोई अंत नहीं होता । अपनी कल्पनाओं को वास्तव में लाने हेतु वह प्रयत्न करता रहता है । इस भागदौड में कही कही उसे अपना कुछ न कुछ खोना भी पडता है । कल्पनाओं का वास्तव रूप देते समय, सपने सच होते समय जो-जो बाधाएँ, रूकावटे उसके सामने उपस्थित होती है, वे ही समस्याएँ है । समस्या याने वह उलझनात्मक कठिन स्थिति जो मनुष्य के कार्य करते समय उसके सामने उपस्थित होती है ।

समस्या इस छोटे शब्द ने विशाल मानव जाति को हर तरह से अपनी परिधि में बांध रखा है । मानव जीवन का ऐसा कोई भी हिस्सा नहीं हैं, जिसे किसी-न-किसी समस्या ने घेर न रखा हो । जिंदगी में हर दिन मानव के सामने जो भी समस्याएँ आती है, उन्हे समाप्त करने में, सुलझाने में वह दिन-रात व्यस्त रहता है । कभी कभी इन समस्याओं को सुलझाते समय उसे अपनी आत्माहुति भी देनी पडती है । मानव की इन समस्याओं ने साहित्य को भी अपनी ओर आकृष्ठ किया है ।

समस्या आज एक कठिन उलझन के सिवा कुछ नहीं है । मनुष्य सामने आनेवाली समस्याओं का समाधान खोजने का कार्य कर रहा है, परंतु वह उसमें इतना उलझ गया है की समस्या का सही समाधान नहीं

कर पा रहा है । वह बार - बार उसी में उलझ रहा है । अत: अधोलिखित पंक्ति में हम समस्या शब्द का अर्थ परिभाषा, व्याप्ति देखेंगे ।

संस्कृत भाषा के 'सम्' उपसर्ग तथा 'अस्' धातु के संयोग से 'समस्या' शब्द की व्युत्पति हुई है । 'सम्' का अर्थ है .... 'एकत्र' तथा 'अस्'का अर्थ है ..... 'फेंकना' या 'रखना' अर्थात एक रखना या करना ।

2.1 समस्या : विभिन्न अर्थ एवं परिभाषा -

हिंदी के विभिन्न कोशकारों ने जिस रूप में समस्या शब्द को परिभाषित किया है तथा 'समस्या' शब्द के विभिन्न अर्थ प्रस्तुत किए है उनका संक्षिप्त अवलोकन दृष्टव्य है -

1. हिंदी विश्वकोश के अनुसार -

''समसन उक्तस 'सेपण' सम् असण्यत्

1. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है ।

पर्याय - समासार्था,समास्यार्था, समास्रार्थी ।

2. संघटन ।

3.मिश्रण, मिलाने की क्रिया ।

4. ''कठिन अवसर या प्रसंग '' [1]

तात्पर्य साहित्य में किसी काव्य ज्ञान की आजमाईष के लिए काव्य तथा श्लोक अथवा छंद का अंतिम पद उसके सामने रखा जाता था और उस व्यक्ति को उसके आधार पर अंतिम पद को पूर्ण करना होता था । अर्थात वह चूनौती उसके सामने रखी 'समस्या' ही होती थी । इसके साथ ही 'समस्या' इस शब्द के विभिन्न अर्थ भी दिए है ।

2. हिंदी शब्दसागर के अनुसार -

1. " संघटन ।

2. मिलने की क्रिया, मिश्रण ।

3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है ।

4. कठिन अवसर या प्रसंग । कठिनाई । जैसे - इस समस्या तो उनके सामने कन्या के विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थित है । "[2] प्रस्तूत परिभाषा में ऊपर निर्दिष्ट परिभाषा का ही अर्थ बोध होता है । इसके साथ ही वर्तमान स्थिति में समस्या का जिस रूप में अर्थ लिया जाता है उसे भी उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है ।

3. मानक हिंदी कोश के अनुसार -

1. " मिलने की क्रिया या भाव । मिलन ।

2. मिश्रण क संघटन ।

3. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो समता हो । कठिन या बिकट प्रसंग (प्रॉब्लेम)

4. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कौशल की परिक्षा करने के लिए उस उद्देश्य से कविओं के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप छंद या श्लोक प्रस्तुत करें ।" [3]

प्रस्तुत परिभाषा में ऊपर निर्दिष्टित परिभाषा का अर्थ निहित है । इस अर्थ के साथ ही इस परिभाषा में एक ऐसे उलझनवाले विचार का जिक्र किया है जिसका समाधान सहज नहीं होता हो तथा समाधान होना कठिन बात हो ।

4. नालंदा विशाल शब्दसागर के अनुसार -

1. ''वही उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके । कठिन या विकट प्रसंग । प्रॉब्लेम ।

2. संघटन ।

3. किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सन्मुख रखा जाता है ।'' [4]

5. भाषा - शब्द कोश के अनुसार -

''कठिन या जटिल प्रश्न, गुढ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलने का भाव या क्रिया ।'' [5]

उपरोक्त परिभाषाओं से यह बात स्पष्ट होती है कि 'समस्या'शब्द किसी पद या काव्य का वह अंश है, जिसके सहारे पूर्ण पद की रचना की जाती है । परंतु आजकल व्यवहार में आनेवाली कोई भी कठिन या उलझन पैदा करनेवाली स्थिति को समस्या के नाम से अभिहित किया जाता है । अत: हम कह सकते है -

'मनुष्य को अपने जीवन मापन के समय जिस उलझनात्मक प्रसंग या कठिनाइयों का सामना करना पडता है, वे कठिनाइयाँ उसके सामने एक चुनौती के रूप में खडी होती है, उन्ही चुनौतियाँ को हम समस्या कह सकते है ।'

चित्रकाव्य के सात भेदों में से 'समस्या' भी एक है । इसका लक्षण निरूपित करते हुए पुराणकार ते कहा है -

''सुश्लिष्ट पद्य में कं यन्नानाश्लोकोश विनिर्मितम्.
सा समस्या परस्या .... लपस्यो : कृति संकरात ''[6]

संस्कृताचार्यो ने समस्या का केवल यही अर्थ लगाया है कि समस्या वह हैं, जिसमें अपनी दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो । किंतु आधुनिक युग में समस्या का स्वरूप परिवर्तित होता गया और अब इसका अर्थ केवल कठिन वस्तु से लिया गया प्रतित होता है । पर साथ - साथ किसी भी कठिन प्रश्न का उत्तर संभव एवं असंभव सभी प्रकार के व्यापार के माध्यम से दे देना भी लक्ष्य रहा है । भाषा शब्द को आचार्यों ने समस्या का

अर्थ कठिन या जटिल प्रश्न, गुढ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलाने, का भाव या क्रिया लिया है । करूणापति त्रिपाठी ने भी कठिन अवसर या प्रसंग अर्थ में स्वीकार किया है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि समस्या आज एक कठिन उलझन के सिवाय और कुछ नहीं । पर मानव इस उलझन की सुलझन को पाने के लिए हाथ -पाँव हिलाने पर भी इसके हाथ में सिवा उलझन के कुछ भी नहीं आ रहा है । समस्या का स्वरूप आज मकड़ी के उस जाल सदृश्य लगती है जो देखने में तो अलग - अलग तंतुवाय ही दिखाई देते हैं । परंतु एक दुसरे निगुंघित है कि उन्हें अलग किया ही नहीं जा सकता । जीवन की जटिलताएँ, कठिनाइयॉ और समस्याएँ उसकी वित्तवृत्तियों के विकास के साथ-साथ निरंतर बढती चली जा रही है । मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती हैं । यही अतृप्ति कालान्तर में जीवन में समस्याओं का जाल फैला देती है आज के युग में तो समस्याएँ जीवन के लिए इतनी बढ गई है कि उनके कारण जीवन एक स्वयं समस्या हो गया ।

2.2 समस्या साहित्य की विशेषताएँ एवं उद्देश्य -

आज का साहित्य अनेक धाराओं से बढता प्रवाहमान होते - होते आगे बढ़ने लगा है । उसी प्रकार आज का साहित्यकार भी जहाँ एक ओर अपने साहित्यकार के दायित्व के प्रति जागरूक है । व्यक्ति और राष्ट्र की प्रगति की आकांक्षा से प्रेरित हो विभिन्न विचार - संघर्षों का वारिस बन, समाज के सदस्य के रूप में साहित्यकार के अनिवार्य संबंध की भूमिका को स्वीकारते हुए, राष्ट्र - निर्माण की व्यापक राष्ट्रीय चेतना के साहित्य सृजन की समस्याओं से उलझा हैं । 'किसी ने कहाँ भी है कि जहाँ न पहुँचे रवि,वहाँ पहुँचे कवि' के अनुसार साहित्यकार " देश और समाज की बदलती हुई स्तिथियों में संक्रान्ति युगीन संभावित जघन्यता, भ्रष्टाचार, बेईमानी, स्वार्थ लोलुप्ता, घोर व्यक्तिवादिता, अहं कुण्ठाओं, काम अतृप्तियाँ और खंडित व्यक्तिवाले मानव समूहों के बीच जीवन के नये मान मूल्यों, नये नैतिक मान, आस्था के नये स्तंभो, विश्वास के नये आधारों तथा देश और

मानवता को नई भव्यता, सुंदरता और संपन्नता प्रदान करने के लिए आकुल और प्रयत्नवान, दृढ आस्थावान विश्वासी मानवीय चरित्रों को गढ़ने में सलंग्न है ।"[7]

"अच्छा साहित्यकार स्त्रष्टा और द्रष्टा दोनों का काम करता है । साहित्यकार और कवि जीवन के शुल्क इतिवृत्त से उसे याने मानव को निकालकर सरसता का स्रोता प्रवक्ति के लिए समसामायिक समस्याओं का चित्रण सदैव करता ही रहा है । एक जागरूक मानवतावादी कलाकार की आत्मा इसी समसामायिकता व युगीनता में निवास करता है न कि वादीयता में । साहित्यकार वस्तुत: समाज की ईकाई होता है इस नाते यह कर्तव्य हो जाता है कि वह अपने युग की राष्ट्रीय जातीय और अन्य सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं की ओर से उदासीन न हो प्रत्युत उन्हें उभार कर सबके सम्मुख रखें ।"[8]

उनके उपर्युक्त निदानों की ओर संकेत कर समाज एवं देश की एक स्वस्थ दिशा दे, यही उसका उद्देश्य है । संदर्भ में मोहन राकेश का कथन द्रष्टव्य है - " साहित्य रचना केवल फालतु समय में किया जानेवाला कर्म नहीं । अन्य कलाओं की तरह इसके लिए भी व्यक्ति के पुरे समय और व्यक्तित्व का सर्मपण आवश्यक है । केवल प्रतिभा ही एक लेखक का निर्माण नहीं करती । प्रतिभा एक बंद कैमरे के लैन्स की तरह है । इसी तरह लेखक के लिए रचना ही साधना नहीं जीवन भी साधना है और इस साधना को स्वीकार करके ही वह अपने व्यक्तित्व की रक्षा कर सकता हैं ।"[9]

साहित्य क्या है इसके संबंध में रामरत्न भटनागर कहते हैं - "लौक और व्यक्ति के जीवन की अभिव्यक्ति ही साहित्य है ।"[10]

जीवन का साहित्य से और साहित्य का साहित्यकार से अनन्य साधारण सबंध होता है । साहित्यकार समाज में रहता है समाज में जो भी अच्छी - बुरी बातें घटित होती हैं, उनका असर साहित्यकार पर पडता है इसका प्रतिफलन ही साहित्य है । अत: स्पष्ट है कि साहित्य जीवन का दर्पण होता है । जीवन जीते हुये मनुष्य को अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पडता है । संक्षेप में हम यह भी कह सकते हैं कि समस्या

साहित्यकार का उद्देश्य है । मानव को समस्याओं और रूढ़ियों की काल रात्रि से निकालकर नैतिकता का इतना बल भर दे कि भयंकर से भयंकर तूफानों के मध्य भी उसकी नौका कही डगमगाये नहीं । समस्याओं के समाधान को इस रूप में प्रस्तुत करे की वे शुगर कोटेन हो ।

साधारण मानव को वैसे तो उसकी सिर्फ अच्छाई ही अच्छाई दिखाई दे । कुंठाओं से ग्रस्त इस जीवन में भी एक नई चेतना - नया आत्मबल और नया ढाढ़स भरना हैं, मानव जाति की जरूरतों और हितों को ध्यान में रखते हुये, युगानुरूप और समसामायिकता को लक्ष्य मानकर ऐसे साहित्य का निर्माण करना उसका उद्देश्य होना चाहिए । जो मानवता की बुराईयों की तलाश कर जीवन की शुद्रताओं और संकिर्णताओं से ऊपर उठाकर मानवता के ऊस वास्तविक घरातल लाकर प्रस्तूत करें । जहाँ उसे आगे बढ़ने में सतत प्रेरणा मिले और वह समस्याओं का हल करता हुआ विजयी मानव बनकर राष्ट्र एवं समाज की समस्याओं का चित्रण समाधान ही उसका लक्ष्य होना चाहिए ।

प्राचीन मानव शांति के युग से गुजर रहा था किंतु तब भी उसकी अपनी - अपनी युगानुरूप अलग अलग प्रकार की समस्याएँ थी । आज अणु और एट्म बम्ब जैसे विस्फोटक तत्त्व प्रकाश में आ गये हैं । आज मानव शांति के युग से गुजर रहा है, जिसमें चारों ओर से भयानक बमों की विस्फोटक ध्वनि और उत्तेजना है। इन विशेषताओं ने न केवल जीवन को ही पूर्णता प्रभावित किया अपितु जीवन से संबंधित साहित्य को भी पूर्णत: प्रभावित किया है । अत: इसका मूल स्वर रूढ़ि विध्वंसक है और समसामायिक जीवन के यथार्थ से स्फूट एक या अनेक समस्याओं पर बौद्धिक, वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से विचार करना है । समस्या साहित्य आशा और निराशा का सुख और दु:ख का, हास्य और रूदन का संगम स्थल है, और इसका उपजीन्य है । समस्या, विडंबना, रूढ़िबद्धता, एवं अनास्था । यह न केवल समस्या साहित्य की विशेषताएँ हैं बल्कि आज के आधुनिक समसामायिक समूच्च साहित्य की भी यही विशेषताएँ हैं ।

"वास्तव में वर्तमान वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप निर्मित मानव - मन और परिवर्तित भाव - बोध तथा युग बोध का ऐतिहासिक परंपरा के साथ समन्वय स्थापित कर जीवन के नये क्षितिज

स्पर्श करना ही 'आधुनिकता है । मानव के नये 'अध्यात्म' की खोज है । आधुनिकता कोई ओढ़ी हुई या लादी हुई चीज नहीं है । वह जीवन की गहराई नापने का मानव - सापेक्ष दृष्टिकोण है । वह दृष्टि - सापेक्ष है । आधुनिक युग की जटिल मन: स्थिति और परिवंश को पकड़ पाना ही आधुनिक युगबोध है ।" [11]

इस बदलते हुऐ आधुनिक युग ने अनेकानेक नयी -नयी समस्याओं को जन्म दिया है मन की रहस्यपूर्ण गुथियों को सूलझाना स्वतंत्र व्यक्तित्व से उत्पन्न नारी समस्या, पुरूष नारी सबंध की नयी कल्पना तथा तलाक समस्या, दहेज समस्या, अनाथों की समस्या, कुमारी माता समस्या, भ्रष्टाचार, रिश्वत की समस्या, अनेक समस्याओं को नष्ट करने का प्रयास भी किया गया है । जैसें राज्यों का विलीनीकरण कर जनवादी शासन व्यवस्था की स्थापना, जमींदारी प्रथा का अंत कर किसानों को अपने खेतों का मालिक बनाना, छुआ - छूत को गैर कानूनी कर, वर्ण वैषम्य को दूर करना, बालिग मताधिकार, तलाक बिल, कोड़बिल और दहेज बिल द्वारा समाज की उन्नति का प्रयास किया है । पूंजीपतियों के शोषण से मजदूरों की रक्षा करने का कानून बनाया, व्यक्तिगत पूँजी के समांतर सार्वजनिक पूँजी के उद्योगों की स्थापना । पंचवार्षिक योजनाओं द्वारा देश का सर्वतोमुखी विकास कर राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से संपन्न और आत्म - निर्भर बनाने का प्रयास करना आदि समाजवादी समाज व्यवस्था की दृष्टिकोण से संम्बधित जितनी भी समस्याएँ है प्रात्र : उन सभी का चित्रण हमें आधुनिक साहित्य में देखने को मिलती है ।

साहित्यकार अपने युग और परिस्थितियों से प्रभावित हो ऐसे साहित्य का निर्माण करता है । जो एक ओर युग की प्रतिध्वनि हो और दुसरी ओर इसमें वह सामर्थ्य हो जो अपना प्रभाव डालने के बाद प्रतिक्रिया स्वरूप उठी हुई ज्वालाओं से किसी भी प्रकार टूक -टूक न होने पाये । स्वतंत्रता से पूर्व का लिखा हुआ समस्याओं युक्त साहित्य ऐसा ही था ।

स्वातंत्रोत्तर नाटक एकांकी साहित्य तो इस दृष्टि से एक कदम और भी आगे बढ़ गया है । व्यक्ति समाज और युग की समस्याओं को प्रच्छन्न नहीं अपितु सीधे रूप से लिया जाने लगा । इसका कारण है नाटक, एकांकी आज वह स्वयं समस्यामय युग से गुजर रहा है । अत: उस युग की समस्याओं को लेना उसके लिए

अनिवार्य हो गया है । भले ही वह उसका अंशिक रूप चित्रित करे या भव्य एवं विशाल । जिन नाटक एकांकी का निर्माण आज हो रहा है या हो चुका है उसमें प्रमुख पात्र जहाँ आपबीती सूनाने का प्रयास करता है वहाँ वह अपने अंतर्मन के विश्लेषण द्वारा अपनी वर्तमान समस्याओं में कार्य करने के सूत्र ढुँढ़ता जाता है ।

प्रभाकरजी इससे दूर नहीं रहे हैं उनकी नाटक एकांकी जीवन की गहराई में उतरती हैं । सामाजिक समस्या को लेकर, धार्मिक, आर्थिक, राजनितिक समस्या का विश्लेषण करने में सिद्धहस्त रहे हैं। इसे स्पष्ट करते हुए डा. रमेश तिवारी लिखते है - " उनके एकांकी नाटको में जीवन के बाह्य पक्षों पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना ध्यान जीवन की आंतरिकता और जीवन में चलने फिरनेवाले विविध चरित्रों को मानसिक आंतरिकता काफी हद तक साकार हो गयी है और अधिकतर कार्यशील भी वही रही है ।"[12]

सामाजिक समस्या पर एकांकी नाटक यह सिद्ध करने पर तूले हैं कि इससे राष्ट्र की गति कैसे रूक जाती है । एकांकीकार ने इसमें तलाक, छुआछुत, अनमेल विवाह, बेकारी, अनाथ, अवैध संतान, महानगर, विधवा, मद्यपान, भ्रष्टाचार, आदि समस्याएँ राष्ट्र के लिये किस प्रकार घातक है । यह बताते हुए राष्ट्रीय प्रगति कैसी धीमी है इसके कई कारण साहित्य में बतलाये गये हैं ।

2.3 समस्या के प्रकार -

भारतीय समाज में प्रमुख रूप से सामाजिक समस्या, धार्मिक समस्या, आर्थिक समस्या, राजनीतिक समस्या और सांस्कृतिक समस्या यह समस्याएँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं । एकांकीकार ने उपर्युक्त सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं में आनेवाली अनेक समस्याओं का विश्लेषण किया हैं । इसी तरह यह समस्याओं की चर्चा उनकी एकांकीयों में देखने को मिलती हैं ।

2.4 प्रभाकरजी के एकांकियों में चित्रित समस्याएँ -

हर एक युग में अपनी - अपनी समस्याएँ होती हैं । युगानुरूप समस्याएँ तथा उनका स्वरूप भी बदलता रहता है । एकांकीकार ने प्रमुख सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत निम्नलिखित समस्याओं का विश्लेषण सुंदर रूप से किया हैं ।

1. सामाजिक समस्याएँ -

1. उच्च - नीच जाति की समस्या।
2. काम समस्या।
3. प्रेम की समस्या।
4. परिवार नियोजन की समस्या।
5. अनमोल विवाह।
6. अनाथों की समस्या।
7. फैशन की समस्या।
8. अवैध संतान की समस्या।
9. स्वच्छंदजीवन की समस्या।
10. महानगर की समस्या।
11. विधवा की समस्या।
12. मद्यपान की समस्या।
13. भ्रष्टाचार की समस्या।
14. तलाक की समस्या।
15. कुमारी माता की समस्या।
16. मनोरूग्णों की समस्या।

उपर्युक्त प्रमुख समस्याओं की चर्चा एकांकीकार ने अपनी एकांकियों में की है । इसके अलावा कही समस्याओं के ओर उनका देखने का दृष्टिकोन अलग दिखाई देता हैं । एकांकीकार भारतीय राजनीति से संबंधित रहे चुके है । इसलिए राजनीतिक समस्याओं की चर्चा उनकी एकांकियों में आना अनिवार्य हैं ।

2. राजनीतिक समस्याएँ -

1. परकीय आक्रमण की समस्या।
2. देश विभाजन की समस्या।
3. न्याय की समस्या।
4. रिश्वत की समस्या ।
5. सत्ता का दुरूपयोग।
6. शिफारिश की समस्या ।
7. छलकर संपत्ति हड़प करने की समस्या ।
8. दल बदलू नेता।
9. शरणार्थियों के पूर्नवसन की समस्या।
10. लोकतंत्र की समस्या ।
11. लोक नेता द्वारा शोषण की समस्या ।

राजनीतिक समस्याओं के चित्रण द्वारा उन्होंने देश की प्रगति कैसी धीमी हो गयी यह बतया हैं ।

3. धार्मिक समस्याएँ -

1. धर्मिक संघर्ष की समस्या।
2. धार्मिक कठोरता की समस्या।
3. धार्मिक अंधविश्वास की समस्या ।
4. धर्म में व्यक्ति स्वातंत्र्य की समस्या।

4. आर्थिक समस्याएँ -

1. गरीबी की समस्या।
2. बेकारी की समस्या।
3. ऋण की समस्या।
4. कर की समस्या
5. मजदुरी की समस्या।
6. ब्लॅक मार्केट ।

धार्मिक और आर्थिक समस्या द्वारा समाज में निर्माण होनेवाले गंभीर प्रश्नों की चर्चा की हैं ।

इस प्रकार की न जाने कितनी ही समस्याएँ हमें समाज में देखने को मिलती हैं । अत: प्रभाकरजी के एकांकियों में हमें ये सारी समस्याएँ दिखाई देती है । इन समस्याओं का अनुशीलन मेरा मुख्य उद्देश्य था इन प्रमुख समस्याओं के साथ अन्य सारी समस्याओं का अनुशीलन करने का प्रयास किया है।

प्रभाकरजी ने विभिन्न अंगो का लेखन कर हिंदी जगत को दिया है । द्वितीय महायुद्ध, स्वतंत्रता प्राप्ति, बंगाल का अकाल देखकर वे चूप नहीं रह सकते थे । बंगाल का अकाल आदि अनेक समसामायिक विषयों को लेकर उन्होंने अपने साहित्य का निर्माण किया । लेकिन 'द्वितीय विश्वयुद्ध ने जिस अकाल, हिंसा, बीभित्सता और नरकीयता को जन्म दिया था उसका चित्रण सफलता के साथ किया है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो प्रश्न निर्मित हो गये उसका और स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व समस्याओं का चित्रण उनकी एकांकी साहित्य में मिलता है ।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त सभी समस्याओं का निराकरण प्रभाकरजी के साहित्य में आ गया है । साहित्यकार का सिर्फ समस्याओं को लिखना नहीं हैं अपितु उसका निराकरण और अन्य अंगो का भी विश्लेषण करना उद्देश्य हैं । इस प्रकार समस्याएँ तो बहुत है, प्रसंग, काल के अनुसार वह बदलती है । एकांकीकार ने उन समस्याओं को चुना

है जो समाज के अंतर्गत पायी जाती हैं और मनुष्य के साथ संबंधी है । इन समस्याओं की सविस्तर चर्चा हमने अध्याय तीन, चार और पाँच में की हैं ।

– संदर्भ –

1. सं नगेंद्रनाथ वसू - हिंदी विश्वकोश भाग - 23, पृ 508
2. सं डॉ .श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्दसागर भाग - 10, पृ 4967
3. सं . रामचंद्रवर्मा - मानक हिंदी कोश भाग 5, पृ 283
4. सं श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृ 1407
5. डा. रामशंकर शुक्ल 'रसाल' भाषा - शब्द कोश, पृ 1522
6. डा. विमलभास्कर, अग्निपुराण अ 341/31 हिंदी में समस्या साहित्य, पृ. 9 से उद्धृत
7. डा. विमलभास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य, पृ. 9 से 10
8. डा. रामगोपाल सिंह चौहान - आधुनिक हिंदी साहित्य, पृं. 30
9. मोहन राकेश - साहित्यकार की समस्या, पृ. 224
10. रामरत्न भटनागर - समसामायिक जीवन और साहित्य, पृ. 88
11. डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय : द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 34
12. डा. रमेश तिवारी : हिंदी एकांकी स्वरूप और विश्लेषण, पृ. 74

A
13655